:: जन शिक्षा कार्यक्रम क्यों :: और क्या :-

प्रकृति की समस्त इकाईयों में मनुष्य ही ऐसी इकाई हैं जो ज्ञानावस्था में आती हैं । इसी इकाई को शिक्षा की आवश्यकता स्पष्ट होती हैं । प्रत्येक जन अपने परिवेश को सही - सही समझकर उसका विवेक सम्मत सदुपयोग कर सकें ताकि प्रत्येक में सही समझ सही व्यवहार (सामाजिकता) व व्यवसाय में स्वावलंबी हो । इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये निश्चित/तय किया गया कार्यक्रम ही जन - शिक्षा कार्यक्रम हो सकता हैं ।

परिचय

रेखा का निश्चय दो बिन्दुओं से होता है जीवन का मार्ग भी दो बिन्दुओं से ही निश्चित होता है । जहां हम है वहां पहला बिन्दु जहां हमें जाना है वह दूसरा बिन्दु है । इन दो बिन्दुओं के मध्य बिना भटकाव के रास्ता तय करना ही लक्ष्य है ।

समाधान पूर्वक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए शिक्षा ही एक मात्र साधन है ।

शिक्षा के क्षेत्र में तीन महत्वपूर्ण एवं गंभीर प्रश्न है – क्या पढ़ाना ? किस लिए पढ़ाना ? और कैसे पढ़ाना ? इन प्रश्नों के सही हल पर ही उपयोगी एवं सार्थक शिक्षा की संरचना की जा सकती है । शिक्षा से जुड़ी किसी भी योजना में इन तीन बातों पर समान रूप से ध्यान रखने की आवश्यकता है । इन तीनों के बीच तालमेल इस तरह बैठाना होगा कि परिणाम सुन्दर और सुखप्रद निकले ।

प्रचलित शिक्षा में लिखने पढ़ने और बोलने की कलाओं का अभ्यास और अधिकाधिक सूचनाओं के संग्रह की कला पर ही जोर दिया जाता है और मूल्यांकन भी इन्हीं कलाओं का किया जाता है । यह कलायें सिखाना ही शिक्षा नहीं हैं । मनुष्य को इन कलाओं की जरूरत तो पड़ती है, मगर समझदारी के साथ इन कलाओं का सदुपयोग होता है । समझदारी के अभाव में कलाओं को सदुपयोग की अनिश्चितता होती है । अनिश्चितता से मनुष्य भ्रमित होकर दुःखी होता है । दुःख और भ्रम मनुष्य को स्वीकार्य नहीं होता है । अतः समझदारी ही शिक्षा की वस्तु है ।

प्रकृति की सम्पूर्ण रचनाओं में मात्र मनुष्य ही ऐसी इकाई है जिसे शिक्षा की आवश्यकता होती है । क्योंकि शिक्षा ही मनुष्य की जन्मजात अयोग्यताओं को पूरा कर (सत्यबोध, न्याय प्रदान योग्यता और सही मार्ग का निर्णय करने की क्षमता) उसे निरंतर सुखी रहने की स्वतंत्रता प्रदान करती हैं । सही शिक्षा के अभाव में मानव समाज के सभी महत्वपूर्ण अंगों – परिवार, धर्म और राज्य में सही परम्परा नहीं बन पाई हैं और इसके फलस्वरूप मनुष्य भ्रमित और दुःखी बना रहता हैं ।

मानव के लिये मानवीय शिक्षा ही समीचीन हैं हर वस्तु को उसके सही और वास्तविक रूप में देखा जाना चाहिये ।

चर्चा चली है कि शिक्षा में परिवेशीय और क्षेत्रीय विविधताओं को अक्षुण्ण, रखते हुए राष्ट्र की मुख्य धारा से कैसे जोड़ा जाए ? अर्थात् इन्वारमेन्टल तथा कल्चरल डायवर्सिटीज को प्रेज़र्व करते हुए टेक्नोइन्फारमेटिव इन्टिग्रिटी की बात शिक्षा में की जा रही है । इसको ठीक से और बहुत सावधानीपूर्वक समझना पड़ेगा । किन – किन बातों में डायवर्सिटीज है और किन – किन बातों में इन्टरग्रिटी ।

उपरोक्त कार्य करने के लिये मनुष्य में समझदारी आवश्यक है समझदार मनुष्य – भोगें, संग्रह शोषण, विरोध और विद्रोह मानसिकता से मुक्त होकर न्यायपूर्ण व्यवहार करने की क्षमंता सम्पन्न होता हैं । एवं मानवीय व्यवस्थाओं के सभी आयामों में भागीदारी करता हैं ।

जैसा कि स्पष्ट है शिक्षा की प्रासंगिक तैयारी ही प्राथमिक शिक्षा है । बच्चे के समक्ष विश्वास स्नेह व मैत्रीपूर्ण स्वाभाविक आचरण से प्रस्तुत होने पर बच्चे में सहज स्वीकृत मानवीय मूल्यों के प्रति विश्वास दृढ़ होता हैं । और वह आश्वस्त होकर शिक्षा को समर्पित होने की तैयारी करता है इसी के साथ उसे अंक ज्ञान और अक्षर ज्ञान कराना होता हैं इसी प्रकार बालक समझदारी के साथ कुशलता सीखता जाता हैं । यही प्राथमिक शिक्षा हैं ।

****
****
****
****
******

उद्देश्य

बच्चों के लिये स्वाभाविक कार्यक्रम शिक्षा ही है । सभी बालक शिक्षा को समर्पित होते ही हैं । अभी तक और आजकल भी शिक्षा के नाम पर कुछ न कुछ कार्यक्रम होता ही रहा हैं । सदा यही आशा और अपेक्षा बनी रही है कि शिक्षित मनुष्य विश्वसनीय भी होंगे । विद्वान के रूप में प्रकाशित भी होंगे । सभी का सम्मान करेंगे । स्नेहपूर्वक प्रस्तुत होंगे परिवार व समाज में अपनी भागीदारी को विश्वासपूर्वक निभायेंगे तथा व्यवस्था के धारकवाहक बनेंगे । धरती पर प्राकृतिक सम्पदा का संवर्धन करेंगे ।

प्रत्येक बच्चे में कुछ जन्मजात क्षमतायें होती हैं । शिक्षा के द्वारा इन क्षमताओं का सही दिशा में विकास किया जा सकता है । प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में बच्चे के शारीरिक, मानवीय तथा बोद्धिक पक्ष को विकसित करने की आवश्यकता हैं इस आधार पर मुख्य रूप से शिक्षा के निम्न उद्देश्य निश्चित किये जाने चाहिए :-

* प्रत्येक बच्चे की जिज्ञासा शांत करना ।
* प्रत्येक बच्चे के कार्य व्यवहार में सामाजिकता लाना ।
* प्रत्येक बच्चे को प्रकृति का संरक्षण संवर्धन व सदुपयोग सिखाना । प्रकृति के साथ पूरकता की पहचान और निर्वाह योग्य बनाना ।
* प्रत्येक बच्चे में मानवीयतापूर्ण आचरण निश्चित करना ।
* प्रत्येक बच्चे में प्रयोजन पूर्ण चिन्तन प्रयोजन की पहचान एवं सार्थकता स्थापित करना ।
* प्रत्येक बच्चे को स्वतंत्रता का अनुभव कराना तथा निरंतर स्वानुशासनपूर्वक जीने योग्य बनाना ।
* अक्षरज्ञान और अंकज्ञान कराना ।

शिक्षा में उपरोक्त लक्ष्यों को सामने रखकर शिक्षा कार्यक्रम चलाया जायें तो निश्चित ही प्रत्येक बच्चें में मानवीयता पूर्ण आचरण निश्चित हो पायेगा तथा प्रत्येक बच्चा विश्वास निर्वाह करने योग्य बन सकेगा ।

उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिये वर्तमान में प्रचलित सिखना – सिखाने पेकेज एवं वैकल्पीक शाला के लिये निश्चित किये गये – भाषा शिक्षा, गणित शिक्षा, पर्यावरण अध्ययन एवं हस्तकला शिक्षण के साथ ही शिक्षकों के लिये एक जीवन शिक्षा संदर्शिका के माध्यम से मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं एवं भौतिक जगत की समझ का विकास बच्चे में किया जा सके ।

:: कार्य ::

- गांव के समस्त शाला जाने योग्य बालक बालिकाओं को शाला में दर्ज करवाना
- गांव के समस्त लक्ष्य असाक्षरों को साक्षर करने का कार्य करना ।
- नशामुक्ति ।
- स्त्री – पुरूष में समान अधिकार, स्थापना एवं नारी उत्पीड़न उन्मुलन
- पर्यावरण संतुलन, जल भूमि वन एवं वन्य प्राणी संरक्षण ।
- मानव संस्कृति सभ्यता में पिछड़े व्यक्ति के लिये जागृति सहज कार्यक्रम जिससे मौलिक अधिकारों को पहिचानकर कर्तव्यों को निर्वाह कर सकें
- जनसंख्या नियंत्रण प्रवृत्ति के उद्देश्य के लिये कार्यक्रम ।
- ग्रामीण अंचल में बौद्धिक एवं भौतिक विपन्नता उन्मुलन ।

विषय – वस्तु

विद्यालय में प्रवेश पाया हुआ विद्यार्थी विद्यालय को परिवार के रूप में तथा गुरू को संबंधी के रूप में पहचाने इसके लिये सम्पूर्ण प्रणाली एवं नीति का उपयोग शाला परिवार करेगा ।

वस्तुओं की पहचान तथा उनके उपयोग का बोध कराना ।

शरीर, उसकी स्वच्छता एवं स्वास्थ्य का ज्ञान । (उचित आहार की आवश्यकता)

* अक्षर अभ्यास, शब्दों को लिखने का अभ्यास, कविता के माध्यम से शरीर आवश्यक मानवीय गुण, स्वभाव संबंधी कर्त्तव्य एवं दायित्व संबंधी आवश्यकता, उपयोगिता एवं प्रयोगवादी शब्दों के माध्यम से जैसे अम्मा, आशा, आँख आदि ।
* अंक बोध हर गणना को वस्तुमूलक आधार पर सम्पन्न कराना ।
* परिवार संबंधों पर पाठ ।
* स्थानीय उत्पादन कार्यो एवं उत्पादित स्वरूप उपयोगिता पर पाठ ।
* व्यवस्थित दिनचर्या पर पाठ ।
* आसन, व्यायाम और खेल ।
* कर्त्तव्य एवं दायित्व का पाठ ।
* संबंध एवं मूल्य का पाठ ।
* समाज में परस्परता पर पाठ ।
* मनुष्य के साथ प्रकृति की पूरकता का पाठ ।
* नेसर्गिकता का पाठ ।
* परिस्थितियों के मूल्यांकन एवं प्रस्तुती का पाठ ।
* मूल्य चरित्र, और नैतिकता की आवश्यकता का पाठ ।

उपरोक्त के साथ ही सिखना – सिखाना पेकेज एवं वैकल्पीक शाला हेतु, निर्धारित पाठ्यक्रम एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति

****
****
****

:: विधि ::

:: प्रशिक्षण – विधि ::

सर्वप्रथम प्रशिक्षण शिविर द्वारा डी0 आर0 जी0 संकुल प्रभारी, संकुल स्त्रोत ...व्यक, वैकल्पीक शाला पर्यवेक्षक, को जीवन सहज मूल्यों (विश्वास, स्नेह, श्रद्धा आदि) ... निर्वाह करने योग्य क्षमता का विकास करना ताकि उभय तृप्ती और परस्परता सुनिश्चित हो ... । अतः शिक्षण की प्रक्रिया में विद्यार्थीयों और शिक्षकों के बीच विश्वास, सम्मान, स्नेह, ...द्धा आदि का भाव विकसित किया जा सके ।

शिक्षक समाधानिक होगा तो विद्यार्थी को भी समाधानित कर पायेगा । अतः ...क्षकों को विश्वास सम्मान, स्नेह आदि मूल्यों के साथ प्रस्तुत होने योग्य बनाना । विश्वास ... सभी मूल्यों का आधार है । विश्वास का अर्थ है एक दूसरे के प्रति आश्वस्त हो जाना इस ... से आश्वस्त की हम एक दूसरे से सुख के अर्थ में जुड़े है । विश्वास के इस भाव का ...मित हो जाना ही मैत्री हैं ।

सभी स्तर के शिक्षकों, पर्यवेक्षकों के प्रशिक्षण के साथ निम्न दो समितियों ... सदस्यों का प्रशिक्षण भी होगा ।

ग्राम शिक्षा समिति :-

यह समिति सभी बच्चों व व्यक्तियों को शिक्षित करने के लिये सुविधाएं ...ब्ध कराने की जिम्मेदारी का निर्वाह करेगी ।

प्रेरक समूह

इसमें प्रत्येक फलिये के शिक्षित व्यक्ति व माध्यमिक/हाईस्कूल/हायर ...री स्कूल व कालेज की छात्र – छात्रा सम्मिलित होंगे । उनकी जिम्मेदारी होगी कि गांव ...भी बच्चों को स्कूल भेजने के लिये पालकों/अभिभावकों को प्रेरित करें तथा शिक्षा स्तर

को बनाये रखने के लिये शिक्षक के साथ सहयोग करें एवं शिक्षक की गुणवत्ता में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु प्रयास एवं शिक्षकों को इस हेतु महत्वपूर्ण सकारात्मक सुझाव देना ।

इन दोनों समूह में ताल मेल को सुनिश्चित करने के लिये एक शिक्षा सभा का गठन किया जायेगा । जिसमें प्रत्येक परिवार के प्रतिनिधि भागीदारी करेंगे ।

:: शिक्षण – विधि ::

* आज्ञापालन एवं प्रोत्साहन ।
* संबंधी के रूप में प्रस्तुत होकर ममता, वात्सल्य के साथ ।
* मौखिक अभिव्यक्ति एवं शरीर के भाव – भाव के साथ अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान ।
* परिवार में आज्ञापालन, समाज में आज्ञापालन, अनुसरण एवं सहयोग के अर्थ में जीने का अभ्यास ।
* कक्षा स्थली श्यामपट, स्लेट आदि साधनों से/संभाषण, गीत, कविता, चित्रों आदि को पूर्णतया विश्वास विधि से बच्चों में शिक्षा को अर्पित करना ।
* पर्यावरण से वनस्पति आदि का ज्ञान कराना ।

::: कार्य योजना ::

जन शिक्षा कार्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सुद्रढ़ एवं प्रभावी कार्य योजना प्रस्तुत हैं । जिसका आधार जिम्मेदारी, लगन, निष्ठा एवं कार्ययोजना की लक्ष्यपूर्णता हैं ।

कार्य योजना को क्रियान्वयन की सुगमता की दृष्टि से पांच चरणों में विभक्त किया गया हैं ।

* प्रथम चरण

जन शिक्षा कार्यक्रम के प्रथम चरण में कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति का प्रशिक्षण किया जावेगा । ताकि संलग्न व्यक्ति को क्या करना हैं ? कैसे करना हैं ? क्यों करना हैं ? की स्पष्ट जानकारी हो । इस हेतु प्रशिक्षण के दो सत्र सम्पन्न होंगे । प्रत्येक सत्र की अवधि 21 दिन रखी गई हैं ।

प्रथम प्रशिक्षण में संकुल प्रभारी, संकुल स्त्रोत समन्वयक, वैकल्पिक शाला पर्यवेक्षक सम्मिलित होंगे ।

द्वितीय प्रशिक्षण सत्र में शेष सभी अर्थात् ई. जी. एस. गुरूजी, वैकल्पिक शाला शिक्षक एवं प्राथमिक शाला शिक्षक सम्मिलित होंगे ।

प्रत्येक 21 दिवसीय प्रशिक्षण को तीन खण्डों में विभक्त किया गया हैं ;

प्रत्येक खण्ड को विषयवार निम्नानुसार रखा जावेगा ।

(1) जन शिक्षा कार्यक्रम की जानकारी , शासन की अपेक्षा, उद्देश्य एवं कार्य योजना ।

(2) शिक्षा की विषय – वस्तु

(3) शिक्षा की विधि

* द्वितीय चरण

कार्य योजना के इस चरण में ग्राम शिक्षा समिति प्रेरक समूह एवं शिक्षा सभा का गठन किया जायेगा । साथ ही उक्त समितियों को जीवन्त एवं क्रियाशील बनाये रखने के लिये सम्पर्क, समूह चर्चा, जागृकता शिविर एवं बैठकों का आयोजन किया जावेगा । इन गतिविधियों में पर्याप्त सहभागिता प्राप्त की जावेगी । साथ ही 30 सितम्बर 98 से पूर्व सभी विद्यालयों में गांव के समस्त शाला जाने योग्य बालक – बालिकाओं को शाला में दर्ज करवाना सुनिश्चित किया जावेगा । यह चरण प्रथम चरण के साथ – साथ एक माह की अवधि में पूर्ण कर लिया जावेगा ।

* तृतीय चरण

द्वितीय चरण के अंत तक शैक्षणिक सत्र के पूर्व तक की सभी तैयारीयां पूर्ण कर अगला चरण अध्ययन – अध्यापन का प्रारंभ होगा । इस सत्र में सभी शिक्षक एवं गुरूजी प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त मार्गदर्शन के माध्यम से अध्यापन कार्य करेंगे । इस चरण में यह भी सुनिश्चित किया जावेगा कि बच्चो को शिक्षा या पाठशाला से भय न हो । बल्कि अपनापन एवं स्वेच्छा से वह पाठशाला आने लगे । साथ ही शिक्षण की विधि भी भय एवं प्रलोभन से मुक्त हों

* चतुर्थ चरण

तृतीय चरण के दौरान अध्यापन कार्य में पढ़ने – पढ़ाने, समझाने – समझाने में आने वाली समस्याओं का अवलोकन एवं क्रियान्वित कार्यो के प्रति प्रोत्साहन दिया जाना सुनिश्चित होगा । यह कार्य प्रत्येक माह के अंतिम सप्ताह में पूर्ण कर लिया जावेगा । इस चरण में सभी गुरूजी शिक्षक ग्राम शिक्षा समिति एवं प्रेरक समूह के बीच पर्याप्त समन्वय बना रहे इस हेतु आवश्यक समूह चर्चा एवं समीक्षा बैठक (प्रतिमाह) भी होना सुनिश्चित किया जावेगा । प्राप्त समस्याओं एवं बाधाओं के निराकरण हेतु आवश्यक कार्यक्रम तय किये जावेगे ताकि शिक्षकों की कार्यदक्षता में गुणात्मक सुधार हो सके ।

* अन्तिम चरण

यह चरण प्रत्येक तीन माह की अवधि में सतत् चलता रहेगा । इसमें विगत तीन माह में क्रियान्वित कार्यो की उपलब्धि का आंकलन किया जावेगा साथ ही गत तीन माह में निश्चित किये गये लक्ष्य एवं परिणामों को किस स्तर तक प्राप्त किया जा सका हैं । इसका मूल्यांकन कर अगले तीन माह की रूपरेखा सुनिश्चित की जावेगी । मूल्यांकन के फलस्वरूप प्राप्त समस्या या त्रुटियों का आंकलन कर उसकी पूर्णता हेतु मार्गदर्शन एवं पुनः प्रत्यास्मरण प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न किये जावेंगे । इस चरण में शिक्षा सभा की बैठके होगी जो समस्त गतिविधियों के बारे में स्वतंत्रता पूर्वक अपना विचार रख सकेगी । इस चरण के माध्यम से सभी संकुलों का विशलेषण हो जावेगा । फलस्वरूप श्रेष्ठ संकुलों में अन्य संकुलों के शिक्षक एवं गुरूजी का भ्रमण कार्यक्रम रखा जावेगा ताकि सभी शिक्षक एवं गुरूजी अपनी ओर से सर्वश्रेष्ठ कार्य कर सकें । इस हेतु संकुल प्रभारी एवं संकुल स्त्रोत समन्वयक प्रत्येक केन्द्र के लिये पर्याप्त अवसर साधन और मार्गदर्शन प्रदान करेंगे ।

उक्त समस्त गतिविधियों की उपलब्धियां एवं सुझाव जिला पंचायत अध्यक्ष, परियोजना संचालक राजीव गांधी प्राथमिक शिक्षा मिशन, परियोजना अपर संचालक, परियोजना समन्वयक तथा विकास खण्ड स्तर पर जनपद अध्यक्ष मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं खण्ड शिक्षा अधिकारी के समक्ष मार्गदर्शन हेतु रखा जावेगा ।

******
*****
***
***
**
*

जल शिक्षा कार्यक्रम

वार्षिक कार्य योजना – वर्ष 1998–99

क्र0 1	कार्यक्रम माह 2	जुलाई 98 3	अगस्त 98 4	सित.98 5	अक्टू0 98 6	नव.98 7	दिस. 98 8	जन.99 9	फर. 99 10	मार्च 99 11	अप्रैल 99 12	विवरण 13
1	प्रशिक्षण I		x									प्रथम चरण
2	प्रशिक्षण II			x								प्रथम चरण
3	ग्राम शिक्षा समिति का गठन		x									द्वितीय चरण
4	प्रेरक समूह का गठन		x									द्वितीय चरण
5	शिक्षा सभा का गठन			x								द्वितीय चरण
6	जागरूकता शिविर		x	x			x		x	x		तृतीय चरण
7	समीक्षा बैठक		x	x	x	x	x	x	x	x	x	तृतीय चरण
8	समूह – चर्चा		xx	xx	xx	xx	xx	xx	xx	xx	xx	चतुर्थ चरण
9	मूल्यांकन				x			x			x	अन्तिम चरण
10	शिक्षा सभा की बैठक			x			x				x	अन्तिम चरण
11	सम्पर्क		xxx	xxx	xxx	xxx	xxx	xxx	xxx	xxx	xxx	xxx --"--
12	पुनः प्रत्यास्मरण प्रशिक्षण					xx			xx			--"--
13	शैक्षणिक भ्रमण			x		x		x		x		--"--

//पायस/शाहुआ//